ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

महात्मा ज्योतिबा फूले – एक समाजऋशि

Manoj Kumar

परिचय

भारतीय धरा पर समय–समय पर अनेकों सन्त एवं महापुरूशों ने जन्म लिया तथा समाज को एक नई दिशा प्रदान की ।इन सन्तो–महापुरूशों ने समाज सुधार के लिये अपने–अपने तरीके से कार्य किया। परन्तु इन्होने भले ही परमात्मा का, उसकी श्रेश्ठता का, उसके सदगुणों का संकीर्तन किया हो, लेकिन इन सन्तों–महापुरूशों में किसी भी शुद्रों को समाज के उच्च वर्ग के बराबर उनके समान अधिकारों से अवगत नहीं करवाया। इन सन्त–महापुरूशों ने शुद्रों के गले में पड़ी दास्ता रूपी जंजीर को तोडने का प्रयास नहीं किया। अंग्रेजपूर्व समाज–जीवन पर धर्म की गहरी पकड़ थी। रूढ़ियों के प्रति जड़ता इतनी थी कि लोग उनके खिलाफ जाने की सोच भी नही सकते थे।

समाज सुधार का प्रयत्न करने वाले स्वतंत्रतापूर्व काल के लगभग सभी भारतीय नेता धर्मश्रद्ध थे। लेकिन राजनीति से सर्वथा दूर रहकर समाज के निचले तबके के लिए धर्म का रूप बदलने वाले महात्मा ज्योतिबा फूले का मुख्य उद्देश्य समाज को बदलना था। वे सत्य के प्रति आग्रही थे, सत्यशोधक थे। महात्मा फूले की दृश्टि में सामाजिक विशमता का मुख्य कारण था– ब्रह्मणो का धर्म। यह न केवल विशम समाज रचना का निर्माता था, बल्कि वह उस विशमता को चिरंजीव रखने की कोशिश करने वाली साजिश भी थी। इस ब्राह्मण धर्म के कारण शुद्रों एवं स्त्रियों का जीवन नरक से भी बदतर बन चुका था।महात्मा फूले ने इस कुंद हो चूकी सोच एवं स्वतंत्रता को पुनः बहाल करना तथा समाज के निचले तबके को इसकी जकड़न से मुक्त करवाने को महात्मा फूले ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

महात्मा फूले और समाज

समाज के लिए प्रचलित रूढ़िया ही धर्म था शब्द प्रामाण्य और ग्रन्थ प्रामाण्य की तुती बोलती थी तथा इनका विरोध करने का साहस किसी में नहीं था। परिवर्तन की कल्पना भी अमान्य थी, इसलिए समाज की वृति में एक प्रकार की जड़ता थी। ज्ञान त्रैवर्णिकों की बपौती था और शुद्र–स्त्री के लिए यह राह बन्द थी।

समाज कार्य की दो दिशाएँ होती हैं, एक रचनात्मक और दूसरी संघर्शात्मक। महात्मा फूले ने दोनो दिशाओं में शानदार कार्य किया। जिन विश्लेशकों का ध्यान केवल महात्मा फूले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज की आक्रमकता पर केन्द्रीत है, वे यह भूल जाते हैं कि सत्यशोधक समाज की स्थापना से बीस–पच्चीस वर्शों पूर्व से वे रचनात्मक कार्यों के द्वारा समाज की सेवा कर रहे थे। विधवाओं के लिए आश्रम बनाना, परित्यक्ताओं को आश्रय देना, अछूतों के लिए स्कूल खोलना, पुनर्विवाह करवाना, अछूतों के लिए पानी का हौज खोद कर देना आदि कार्यो के माध्यम से वे लगातार सामाजिक कार्य कर रहे थे।

1873 ई0 में प्रकाशित गुलामगिरी महात्मा फूले द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इस ग्रंथ की प्रस्तावना लिखते हुए महात्मा फूले ने ब्राह्मणों द्वारा शुद्रों पर किये गये अत्याचारों का वर्णन किया गया है। महात्मा फूले का मानना था कि प्रचलित धर्म शास्त्र के आधार पर समाज सुधार कतई सम्भव है, कयोकि धर्म समाज के सभी अगों पर नियंत्रण रखता है। धर्म के व्याख्यता जैसा चाहेंगें समाज वैसा ही आकार धारण कर लेगा।

महात्मा फूले इस प्रकार की व्यवस्था के खिलाफ थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होने समाज में आत्म प्रत्यय और आत्म अवलोकन उत्पन्न किया। महात्मा फूले का मानना था कि समाज की मानसिक गुलामी की जंजीरे को तोडना है तो गुलामी में बांधने वाले धार्मिक नियमों को समाप्त करना होगा। महात्मा फूले के अनुसार निसर्ग ने जब मानव जाति का निर्माण किया तब सामाजिक स्तर पर आज जो भेद दिखाई देते हैं, वे प्रचलित नहीं थे। समानता की जो निसर्ग ने निर्मित कि थी उसे आगे चलकर समाज के वर्ग विशेश के द्वारा ध्वस्त कर दी गई।

महात्मा फूले और नारी अधिकार

उन्नीसवीं शताब्दी में लैंगिक समानता के लिए सर्वप्रथम संघर्श बंगाल मे राजा राममोहन राय ने शुरू किया। उन्होने सती प्रथा निशेध अधिनियम लागू करवाने में विशेश प्रयास किया। विधवा पुनर्विवाह अधिनियम के लिए ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने अथक प्रयास किये। परन्तु इन समाज सुधारकों के प्रयास समाज के उच्च वर्ग की महिलाओं के उत्थान के लिए की लाभदायक रहे। वास्तव में सर्व समाज की महिलाओं के लिए अधिकारों की मांग करने और उसके लिए संघर्श करने वाले प्रथम पुरूश महात्मा फूले ही थे। अपने सामाजिक कार्य का प्रारम्भ ही उन्होने अछूत लड़के–लड़कियों को शिक्षा देने से आरम्भ किया। जनवरी 1848 ई0 मे महात्मा ज्योतिबा फूले ने लड़कियों के जो स्कूल शुरू किया, उस स्कूल ने स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। भारत में यह प्रथम स्कूल था, जो किसी भारतीय द्वारा स्त्री शिक्षा के लिए खोला गया था। परन्तु त्तकालीन रूढिवादी समाज में जब कोई इस स्कूल में शिक्षण कार्य के लिए तैयार नही हुआ, महात्मा फूले ने अपनी पत्नी सावित्री बाई फूले को इस स्कूल में शिक्षण कार्य की जिम्मेदारी सौपी। उन्हे भारत की प्रथम महिला शिक्षक बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

महात्मा फूले ने स्त्री–पूरूश समानता के लिए एक नई विवाह विधि तैयार की। उन्होने अपनी इस नई विवाह विधि में पुरूश प्रधान सस्कृति के समर्थक और स्त्री अधिकारों का हनन करने वाले मंत्रों को अपनी इस विधि से निकाल दिया। उन्होने मराठी में विवाह विधि के ऐसे मंत्रों की रचना की जिसे वर–वधू आसानी से समझ सकें। महात्मा फूले बाल विवाह के विरोधी तो थे ही , इसके साथ–साथ वे विवाह के लिए लड़की की सहमती भी आवश्यक मानते थे। जरठ विवाह, बाल विवाह, बहु पत्नीत्व , केशवपन, नियोग, वेश्यागमन जैसी सारी रूढिया जो स्त्रीयो के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं थी, का उन्होने खुलकर विरोध किया। बाल विधवाओं की सुरक्षा के लिए बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह स्थापित किये।

महिला अधिकारों के लिए ऐसी कोई लड़ाई नहीं जिसके लिए महात्मा फूले ने संघर्श नहीं किया हो। उच्च वर्ग के सुधारक जो अपने समाज की महिलाओं के अधिकारों के प्रति अंजान रहे, तथा इस सम्बन्ध में कोई विशेश कार्य नहीं किया। महात्मा फूले ने उनके सशक्तिकरण के लिए लगातार प्रयास किये। महात्मा फूले का मानना था कि यदि परिवार समानता की भावना पर स्थित रहा तो समाज और राश्ट्र भी अपने आप समानता की भावना से युक्त हो जायेगें। स्त्री श्रेश्ठता को स्पश्ट करते हुए महात्मा फूले ने कहा है कि, मानवी सस्कृती में प्रेम को सर्वोपरि महता दी गई है। स्त्री को प्रेम का वरदान निसर्गतः मिला है। वह इस बात में पुरूशों से श्रेश्ठ है।

महात्मा फूले और भुद्र

महात्मा फूले के मतानुसार जाति व्यवस्था उच्च वर्णो के स्वार्थ को सुरक्षित रखने की एक युक्ति है। भारत में जो लोग शुद्र की श्रेणी में आते हैं, उन लोगो की अवस्था अमेरिका और अफ्रिका के गुलामों से भी बदतर है। महात्मा फूले ने गुलामगिरी की प्रस्तावना में इन गुलामों के साथ शुद्रों की तुलना की है। महात्मा फूले ने लिखा है कि उनकी स्थिती में और गुलामों की स्थिती में कोई अन्तर नहीं है। अगर कोई अन्तर है तो इतना ही कि इन्हे भट्ट लोगों ने जीतकर गुलाम किया, दूसरों को दुश्ट लोगों ने अचानक पकड़ कर गुलाम बनाया।

महात्मा फूले ने इस प्रथा का निडरता के साथ विरोध किया। उनका मानना है कि ईश्वर जो इस समस्त संसार का निर्माण कर्ता है, वो बहुत दयालू है तथा इस प्रकार की अव्यवहारिक व्सवस्था को जन्म नही दे सकता। जिन धर्म ग्रन्थों में ऐसी भेदभाव पूर्ण व्यवस्था दी गई है, वे ईश्वर द्वारा रचित न होकर उन उच्च वर्णो के द्वारा रचित हैं जो इस भेदभाव पूर्ण व्यवस्था का लाभ उठा रहे हैं। महात्मा फूले का यह प्रश्न बहुत तीखा था और इससे भी तीखा था उनका ब्राह्मणों पर किया गया हमला।

महात्मा फूले का मानना है कि बुद्धि और कौशल न तो व्यक्ति के वर्ण पर निर्भर हैं और न ही कुल पर। यह मनुश्य के परिश्रम और तर्क बुद्धि के उपयोग पर निर्भर है। अज्ञान, अन्धश्रद्धा, धार्मिक और सामाजिक शोशण से इस समाज को मुक्त करना है तो इसका एकमात्र उपाय है ज्ञान। जब इन लोगों को पता चल जायेगा कि शोशण क्यों और कैसे हो रहा है, तो सदियों से दबाई हुई ये जातियाँ उठकर खड़ी हो जायेंगी।

महात्मा फूले का कहना है कि ब्राह्मणों की जन्मजात श्रेश्ठता धर्मशास्त्र व्याखाकारों के द्वारा की गई चालाकी मात्र है। सरल, अज्ञानी तथा मेहनत करने वाला चौथा वर्ण अर्थात शुद्र निरन्तर गुमराह रहे , इसलिए ब्राह्मणों ने अपने धर्मग्रन्थ संस्कृत मे लिखे ताकि वे उन्हे समझ न सकें। इस कारण महात्मा फूले ने धर्मशास्त्र और उनके व्याख्याकारों दोनों को ही सिरे से नकार दिया। लेकिन जब राश्ट्र की एकता की बात उठी तो उन्होने निसंकोच यह कहा कि देश सुधार के लिए हम ब्राह्मणों और मांगों को एक पंक्ति में बैठाएगें। वे ब्राह्मण जाति के विरोधी नहीं थे, बल्कि वे उनकी शोशक वृति के विरोधी थे।

महात्मा फूले और किसान

भारत एक कृशि प्रधान देश रहा है, लेकिन यह वास्तविकता है कि कठोर परिश्रम के बावजूद किसानों की दशा हमेशा ही खराब रही है। उन पर तरह–तरह के कर लगाकर उनकी उपज का अधिकतर भाग शासक वर्ग लेता रहा। इस शोशण के कारण उनकी हालत खराब होती चली गई। सारी साल हाड़–तोड़ मेहनत करने के बावजूद लगान चूकाने के पश्चात उनके पास इतना अनाज भी शेश नही बच पाता था कि वर्श भर उनका काम चल सके। अंग्रेजों के शासन में जमीदारी प्रथा लागू होने के बाद तो उनकी हालत और खराब हो गई। अंग्रेजी राज में लगान की विभिन्न प्रणाली तो लागू कर दी, परन्तु किसानों की स्थिती में सुधार के लिए कोई प्रयास नहीं किया। इस कारण उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। महात्मा फूले से पूर्व किसानों की स्थिति पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। महात्मा फूले ने पहली बार किसान का कोड़ा नामक अपनी पुश्तक में किसानों की दयनीय दशा का वर्णन किया और लोगों का ध्यान इस और आकृश्ट किया।

महात्मा फूले एकमात्र ऐसे समाज चिंतक हैं जिन्होने किसानों की समस्या को न केवल समझा बल्कि उनकी समस्याओं के समाधान के लिए सहानूभूतिपूर्वक विचार करते हुए मानवतावादी दृश्टिकोण भी प्रदशित किया। महात्मा फूले का मानना है कि बड़े किसान– जमीदार तो लगान चुकाने के बाद भी काफी मात्रा में अनाज शेश बचा लेते थे, परन्तु छोटे किसान और मजदूरों का बहुत बुरा हाल था। शोशकों के इस रूप को उन्होने बिना किसी लागलपेट के सबके सामने प्रस्तुत किया।

महात्मा फूले ने किसानों की समस्या का मूल कारण अशिक्षा को बताया है। उन्होनें किसानों को सलाह दी की वे अपने व्यक्तिगत जीवन में गैर जिम्मेदारियों से बचें। बहु–विवाह करना बन्द करे। इसके साथ–साथ बाल–विवाह व फिजूलखर्ची को रोके। सरकार को सलाह देते हुए उन्होने कहा कि सरकार को किसानो के लिए अच्छी खाद, अच्छा बीज़, उत्तम खेती का ज्ञान तथा अच्छी पैदावार पैदा करने के तरिके समझाने के लिए पुश्तकें उपलब्ध हों। किसानो के पास श्रेश्ठ नस्ल के बैल हो। अकाल से निपटने के लिए पानी के प्रबंध के लिए जगह–जगह छोटे बांधों का निर्माण किया जाये।

महात्मा फूले ने किसानों पर बढते कर्ज पर चिंता व्यक्त की। उनका मानना था कि यदि किसान का कर्ज कम करना है तो कर की दरों को युक्तिसंगत बनाया जाये। सरकार को अपने बेवजह के खर्चे कम करने चाहिए। यदि किसान की पैदावार बढेगी तो उनके लिए खोले गये बैंक सफल होंगे। पर्यावरण की समस्या जो आज विकराल रूप धारण कर चुकी है, इसके बारे में महात्मा

फूले ने उस समय चिंता व्यक्त की थी। अंधाधूंध कटाई के कारण लगातार कम हो रहे वन क्षेत्र से भविश्य में होने वाली समस्याओं के प्रति लोगों को चेताया था। महात्मा फूले की किसान को कोड़ा पुश्तक का आखरी अंश पर्यावरण समस्या के निदान की दृश्टि से पठनीय है।

इसमें कोई दो राय नहीं की महात्मा फूले को किसानों और मजदूरों की समस्याओं की बहुत अधिक चिंता थी। वे चाहते थे कि मजदूर और किसान भी समाज में सम्मान की दृश्टि से देखे जायें। किसानों और मजदूरों की समस्या को ततकालीन प्रशासन तक पहुचाने के लिए वे 1878 ई0 में पूना में डयूक ऑफ कांउट के सम्मान में आयोजित महाभोज किसान की फटी–पुरानी पोशाक पहन कर पंहुचे। निसन्देह सरकार को किसानों की वास्तविक समस्या सुनाने के लिए इस प्रकार का सहास केवल महात्मा फूले ही कर सकते हैं।

सारांश

महात्मा फूले के सामाजिक विचारों तथा उनके सत्यशोधक समाज की महाराश्ट्र के सामाजिक प्रबोधन में एक अहम भूमिका रही, बल्कि इसका प्रभाव समस्त देश पर पड़ा। महात्मा फूले ने समाज , स्त्री, शुद्र, किसान आदि की समस्याओं को न केवल समाज के समक्ष रखा, अपितु उनकी समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी तरीके भी प्रस्तुत किये। सामाजिक जीवन में यदि समग्र बदलाव लाना है तो उसके लिए प्रभावी नेतृत्व की आवश्यकता होती है। भविश्यदर्शिता, कृतिशीलता, वेधशक्ति, प्रबोधन, चतुरता, जनसंग्रह इत्यादि गुण नेता के पास न हों तो समाज–सुधार का आन्दोलन खड़ा नहीं हो सकता महात्मा फूले के पास ये गुण प्रचूर मात्रा में थे तथा काल के प्रवाह की दिशा भी उन्हे ठीक तरह से समझ में आती थी, इसी कारण वे सार्वजनिक जीवन में इतने सफल रहे।

संदर्भ सूचि

1 अग्रवाल, दया : ज्योतिराव फूले, नैशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
2 कीर, धन्नजय : भारतीय सामाजिक क्रान्ति के जनक, नई दिल्ली।
3 गेल ओम्वेट : दलित दृश्टिकोण, नई दिल्ली।
4 गेल, ओमवेट : दलित और प्रजातांत्रिक कान्ति, सेग पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड़ इण्डिया, दिल्ली।
5 चन्द्रा, आर0 : आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली।
6 नैमिसाय, एम0 : भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास, राधाकृश्ण प्रकाशन नई दिल्ली।
7 शहा मु0ब0 : भारतीय सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतिबा फूले, राधाकृश्ण प्रकाशन नई दिल्ली।
8 रतू, के0के0 : भारतीय समाज : चिन्तन और पतन, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
9 शर्मा, वीरेन्द्र : भारत में सामाजिक परिवर्तन पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
10 सरकार, सुमित : आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।